بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصار اللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 10.02.2023 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विवेक पूर्ण कथनों की रोशनी में क़ुर्आन करीम के फ़ज़्लों, स्तरों एवं प्रतिष्ठाओं तथा महानता का बयान।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 10 फ़रवरी 2023, स्थान मस्जिद मुबारक यइस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले ख़ुत्बः में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कथन क़ुर्आन करीम की महानता एवं महत्त्व के बारे में बयान कर रहा था, आज इस संदर्भ में कुछ और पेश करूँगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने रानी विक्टोरिया की डायमंड जुबली के अवसर पर रानी को इस्लाम की तबलीग़ के लिए लिखी गई अपनी तह्फ़ः क़ैसर नामक पुस्तक में क़ुर्आन करीम की विशेषताएँ तथा महत्त्व के बारे में फ़रमाया कि क़ुर्आन करीम विवेक पूर्ण गहरी बातों से परिपूर्ण है तथा प्रत्येक शिक्षा में इंजील की तुलना में वास्तविक नेकी सिखाई गई है, विशेष रूप से सच्चे तथा अपरिवर्तन शील ख़ुदा को देखने का चिराग क़ुर्आन करीम ही के हाथ में है, यदि यह दुनिया में न आया होता तो ख़ुदा जाने दुनिया में प्राणियों की उपासना करने वालों की संख्या किस नम्बर तक पहुंच जाती। धन्यवाद का अवसर है कि ख़ुदा क एक अकेला होने का सत्य जो धरती से गुम हो गया था, दोबारा क़ायम हो गया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि कौन था उस ज़माने में जिसने इतने साहस के साथ क़ैसरा-ए-हिन्द (रानी विक्टोरिया) को यह सन्देश भेजा हो अथवा इस्लाम की तबलीग़ की हो। आज यही लोग जिनमें इतना साहस नहीं था कि इस्लाम और क़ुर्आन करीम की महानता के गुण बयान करते, ये कहते हैं कि नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम या अहमदिया जमाअत क़ुर्आन करीम का अपमान कर रही है जबकि ग़ैर-मुस्लिम जो कि क़ुर्आन करीम की महानता का खंडन तो कर नहीं सकते बल्कि उनकी गतिविधियाँ देख कर इस्लाम के विरोध में इतने अंधे हो गए हैं कि अपने दिल की संतुष्टि के लिए क़ुर्आन करोम की प्रतियों को जला कर अपने दिल की भड़ास निकालते हैं, जैसा कि स्वीडन तथा स्कैन्डे

न्यून देशों में इस प्रकार की घटनाएँ हुई हैं। यदि मुसलमान ज़माने के इमाम को मान लें तथा क़ुर्आन करीम की शिक्षा को समझते हुए उसके अनुसार कर्म करें तो ग़ैर-मुस्लिमों को भी इस तरह क़ुर्आन करीम के अपमान का साहस न हो, अल्लाह तआला ही इन लोगों को बुद्धि दे।

केवल क़ुर्आन करीम ही अब मार्ग दर्शन का साधन है, इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इस्लाम एक ऐसा बरकत पूर्ण तथा ख़ुदा के दर्शन दिखाने वाला धर्म है कि यदि कोई व्यक्ति वास्तव में इसकी पाबन्दी ग्रहण करे .... जो ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम क़ुर्आन शरीफ़ में उल्लिखित हैं .... तो वह इसी संसार में ख़ुदा को देख लेगा। वह ख़ुदा जो दुनिया की नज़रों से हज़ारों पर्दों में है उसकी पहचान के लिए क़ुर्आन करीम की शिक्षा के अतिरिक्त अन्य कोई भी साधन नहीं। क़ुर्आन शरीफ़ तर्क संगत रंग में तथा आसमानी निशानों के रंग में अत्यंत सरल तथा आसान तरीक़े से ख़ुदाए तआला की ओर मार्ग दर्शन करता है .... इसमें एक बरकत तथा आकर्षण शक्ति है जो ख़ुदा को पाने वाले को प्रतिपल ख़ुदा की ओर खींचती है तथा रोशनी एवं संतुष्टि तथा शांति प्रदान करती है तथा क़ुर्आन शरीफ़ पर सच्चा ईमान लाने वाला केवल दर्शन शास्त्रियों की भांति यह धारणा नहीं रखता कि इस सुव्यवस्थित संसार का बनाने वाला कोई होना चाहिए बल्कि वह एक व्यक्तिगत विवेक प्राप्त करके .... विश्वास की आँख से देख लेता है कि वास्तव में वह रचनाकार मौजूद है और इस पवित्र कलाम की रौशनी प्राप्त करने वाला केवल शुस्क तर्कों की भांति यह गुमान नहीं रखता कि ख़ुदा वहदहू ला शरीक है बल्कि सैंकड़ों चमकते हुए निशानों के साथ जो उसका हाथ पकड़ कर अंधकार से निकालते हैं, वास्तव में दर्शन कर लेता है कि वास्तविक अस्तित्व एवं गुणों में ख़ुदा का कोई साझी नहीं और न केवल इतना ही बल्कि वह अमली रूप में दुनिया को दिखाता है कि वह ऐसा ही ख़ुदा को समझता है और अल्लाह के एक अकेला होने की महान धारणा ऐसी उसके दिल में समा जाती है कि वह इलाही इरादे के आगे समस्त संसार को मरे हुए कीड़े की भांति बल्कि पूर्णतः नोच तथा पूर्णतः न हान क बराबर समझता है।

फिर क़ुर्आन शरीफ़ में शिक्षा एवं उसके अनुसार अमल क निर्देशों की पणता के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह भी याद रखना चाहिए कि क़ुर्आन शरीफ़ में इलमी तथा अमली तकमील की हिदायत है। اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ में तकमीले इलमी की ओर संकेत है .... और तकमीले अमली का बयान صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ में। फ़रमाया कि जो परिणाम सम्पूर्ण एवं सर्वश्रेष्ट हैं वे प्राप्त हो जाएँ। अमली उन्नति के लिए उन लोगों के रास्ते पर चलने के लिए दुआ है जो पुरस्कृत हैं, नबी, सिद्दीक़, शहीद तथा सालहोन हैं और फिर इनके उदाहरण भी मौजूद हैं तथा इस ज़माने में भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो सत्यमार्गी हैं, जिनको अल्लाह तआला पुरस्कार प्रदान करता है। फ़रमाया- जैसे एक पौधा जो लगाया गया है जब तक पूर्ण रूप से पोषण प्राप्त न कर ले उसको फल फूल नहीं लग सकते, इसी प्रकार यदि किसी हिदायत के उच्चतम तथा सम्पूर्ण परिणाम उपलब्ध नहीं हैं तो वह हिदायत मुर्दा हिदायत है .... क़ुर्आन शरीफ़ एक ऐसी हिदायत है कि उसके अनुसार कर्म करने वाला उच्चतम स्तर प्राप्त कर

लेता है और ख़ुदा तआला से उसका एक सच्चा सम्बंध पैदा होने लगता है, यहाँ तक कि उसके शुभ कर्म एक पवित्र वृक्ष की भांति फल और फूल लाते हैं।

क़ुर्आन मजीद एक ऐसा पवित्र ग्रंथ है जो उस समय दुनिया में आया था जबकि बड़े बड फ़साद फैले हुए थे तथा अनेक प्रकार के बिगाड़ आस्था एवं कर्मों में पैदा हो गए थे। इसकी ओर अल्लाह तआला इशारा फ़रमाता है- ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ अर्थात- समस्त लोग, क्या अह्ले किताब और क्या दूसरे, सब के सब भ्रष्ट धारणाओं म लिप्त थे तथा दुनिया में महा उपद्रव फैला हुआ था। अतः इसी कारणवश ख़ुदा तआला ने समस्त झूठी आस्थाओं क खंडन के लिए क़ुर्आन करीम जैसी सम्पूर्ण पुस्तक हमारी हिदायत के लिए भेजी, विशेषतः सूरः फ़ातिहः जो पाँच समय की नमाज़ों की हर एक रकअत में पढ़ी जाती है, सांकेतिक रूप से समस्त आस्थाओं का वर्णन है। जैसे फ़रमाया- اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ अर्थात समस्त विशेषताएँ उस ख़ुदा के लिए शोभायमान हैं जो सारे संसारों को पैदा करने वाला है। الرَّحْمٰنِ वह बिना क्रिया के पैदा करने वाला है तथा बिना किसी कर्म के प्रदान करने वाला है। الرَّحِيْمِ जो काम करो उसका फल देता है, दुआएँ करो उनको क़बूल करता है। वह مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ है- प्रतिफल एवं दंड दिए जाने वाले दिन का स्वामी है और अच्छा बदला तथा दंड इसी संसार में भी है और अगले जहान में भी। फ़रमाया कि इन चार गुणों में कुल दुनिया के सम्प्रदायों का बयान किया गया है। अब यदि ध्यान पूर्वक इंसान पाँच समय की नमाज़ों में यह पढ़े तो बड़ो मअरिफ़त (ब्रह्मज्ञान) प्राप्त कर सकता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन करीम एक चमत्कार है। चमत्कार एक ऐसी दुर्लभ वृत्ति को कहते हैं कि विरोधी पक्ष उसके मुक़ाबले पर कोई उदाहरण पेश करने में विवश हो जाए। क़ुर्आन करीम का चमत्कार अरब देश के समस्त निवासियों के सामने पेश किया गया किन्तु अरब के समस्त देशवासी उसका उदाहरण पेश करने में असमर्थ हो गए। अतः चमत्कार का यथार्थ समझने के लिए क़ुर्आन शरीफ़ का कलाम अत्यंत उज्जवल उदाहरण है, इसका कलाम अत्यंत सुगम एवं समृद्ध है। यह एक ऐसा अद्वित्तीय चमत्कार है जो बावजूद तेरह सौ वर्ष हो जाने के, अब तक कोई इसका मुक़ाबला नहीं कर सका तथा न किसी में सामर्थ्य है जो कर सके। यह चमत्कारी भविष्य वाणियों को भी चमत्कारी इबारत के रूप में बयान फ़रमाता है। अभिप्रायः यह है कि चमत्कार का मूल एवं भारी उद्देश्य सत्य एवं असत्य में तथा सच्चे और झूठे में अन्तर करके दिखलाना है। धर्म का मूल सत्य ख़ुदा तआला के अस्तित्व की पहचान से सम्बंधित है। सच्चे धर्म के लिए आवश्यक है कि उसमें ऐसे निशान पाए जाएँ जो ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर सम्पूर्ण एवं विश्वस्त प्रमाण दें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जो धर्म ख़ुदा की पहचान करवाने के काम को छोड़ता है वह एक मृत धर्म है जिसके द्वारा किसी को पवित्र बदलाव प्राप्त नहीं हो सकता। फ़रमाया कि फिर इस बात का कौन निर्णय करे कि इस किताब में बुद्धि संगत बातें जो लिखी हैं वे वास्तव में इलहामी हैं। हस्तीय बारी तआला पर वे कब प्रमाण दे सकती हैं और कब किसी सत्य के खोजी की चेतना इस बात पर पूरा संतोष पा सकती है कि केवल वही बुद्धि संगत बातें ख़ुदा के दर्शन दिखाने वाले विश्वस्नीय निशान हैं तथा कब यह संतोष हो सकता है कि वे बातें पूर्णत्या ग़लती से पाक हैं। अतः यदि

धर्म केवल कुछ बातों को बुद्धि तथा दर्शन शास्त्र की ओर जोड़ कर अपनी सच्चाई का कारण बयान करता है और आसमानी निशानों और दुर्लभ वृत्ति की बातें दिखलाने पर असमर्थ है तो ऐसे धर्म का अनुकरण करने वाला भ्रमित ह तथा वह अंधकार म मरगा। जब तक एक धम इस बात का ज़िम्मदार न हा कि वह ख़दा क अस्तित्व का विश्वस्त रूप म प्रमाणित करक दिखाए, तब तक वह धम कछ चोज़ नहो ह।

ह़ज़र-ए-अनवर न फरमाया कि यह वह स्तर ह जिसका प्राप्त करन का हम प्रयास करना चाहिए। ख़दा का निशानं स, व्यक्तिगत सम्बंध स पहचान, फिर अल्लाह तआला का यथाथ इंसान पर ख़लता ह। अल्लाह तआला को कपा स अहमदिया जमाअत म एस उदाहरण उपलब्ध ह कि दसर धम वालं बल्कि किसो धम का न मानन वालं का भो ख़दा क अस्तित्व पर विश्वास दिलाया गया, बद्धि संगत प्रमाण दिए गए तथा फिर जब निशान दिखाए गए तथा घटनाएं बयान को गइं ता उन्हान धम का भो माना आर इस्लाम का भो माना। बल्जियम क एक नास्तिक दास्त न बअत को आर बताया कि जब मन ख़दा क अस्तित्व का स्वोकार कर लिया ता फिर मर लिए आर काइ चारा न था कि म अहमदियत आर वास्तविक इस्लाम का स्वोकार न करू आर यह रास्ता क्यंकि मझ अहमदियत न दिखाया था इस लिए म अहमदो मसलमान ह। खद ह कि हमार विराधो यह ज्ञान वधक बात सनना नहो चाहत तथा हम पर यह आराप लगात ह कि हमन क़आन म बदलाव कर दिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमात ह कि क़आन करोम न हर एक घटना का रसल करोम सल्लल्लाह अलहि वसल्लम क लिए तथा इस्लाम क लिए एक भविष्य वाणो घाषित किया ह तथा य घटनाआं को पशगाइया भो स्पष्ट सफाइ क साथ परो हइ ह। अभिप्रायः यह ह कि क़आन करोम सत्य एव यथाथ का एक सागर तथा भविष्य वाणियां का एक समद ह। यह सम्भव नहो ह कि काइ व्यक्ति क़आन का छाड कर ख़दा तआला पर विश्वास कर सक आर यह विशषता मलतः क़आन शरोफ म हो ह कि ख़दा आर इंसान क बोच आए पद दर हा जात ह। क़आन करोम क दा भाग ह, एक कहानियां तथा दसर आदश, काइ बात कथा क रूप म हातो ह तथा कछ आदश हिदायत क रंग म हात ह, जा लाग इनम अन्तर नहो करत व लाग क़आन करोम म विराधाभास निकालन का कारण बनत ह।

यह विषय जारो ह, आर भो आप अल. क कथन ह, समय समय पर बयान करूगा। अल्लाह तआला हम क़आन करोम को शिक्षानसार उचित रूप म अमल करन का सामथ्य प्रदान कर। आमोन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131